नईदुनिया

बिना टैंक उतारे पाकिस्तान के सबसे ताकतवर जनरल बने असीम मुनीर

इस्लामाबाद

पाकिस्तान के सैन्य इतिहास में अभूतपूर्व घटनाक्रम में, जनरल असीम मुनीर देश के सबसे शक्तिशाली जनरल के रुप में उभरे हैं। उन्होंने बिना सड़कों पर टैंक उतारे या तख्तापलट किए, बल्कि संवैधानिक और संसदीय मार्ग से असीमित शक्ति हासिल की है। पाकिस्तान के चीफ आफ डिफेंस फोर्सेज (सीडीएफ) और आर्मी चीफ के रूप में उनकी वर्तमान स्थिति उन्हें सैन्य कमांड ढांचे का निर्विवाद सुपर बास बनाती है।

यह बदलाव पाकिस्तान की शहबाज सरकार द्वारा संसद से पारित डिफेंस फोर्सेज आफ पाकिस्तान एक्ट 2026 और नेशनल कमांड अथारिटी (संशोधन) एक्ट 2026 के माध्यम से हुए, जिन्हें राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी की मंजूरी भी मिल गई है। ये कानून नवंबर 2025 में पारित हुए 27वें संविधान संशोधन का हिस्सा हैं, जिसने देश के सैन्य कमांड ढांचे को मौलिक रूप से बदल दिया। 27वें संशोधन ने चेयरमैन जाइंट चीफ्स आफ स्टाफ कमेटी (सीजेसीएससी) के पद को समाप्त कर चीफ आफ डिफेंस फोर्सेज (सीडीएफ) का नया पद सृजित किया। जनरल मुनीर को देश का पहला सीडीएफ नियुक्त किया गया, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह इस समय सीडीएफ के साथ-साथ सेना प्रमुख के पद की जिम्मेदारी भी निभा रहे हैं।

जनरल मुनीर की यह सुपर पावर रातोंरात नहीं मिली, बल्कि 27वें संविधान संशोधन के साथ ही इसकी शुरुआत हुई, इस संविधान संशोधन ने पाकिस्तान के मिलिट्री कमांड ढांचे को पूरी तरह बदल दिया। इस दोहरी भूमिका के चलते वह पाकिस्तानी थल, नौसेना और वायु सेना के सर्वोच्च कमांडर बन गए हैं। नए रक्षा बल मुख्यालय की कमान संभालने वाले मुनीर अब राष्ट्रीय सुरक्षा, रक्षा और सशस्त्र बलों से संबंधित मामलों पर प्रधानमंत्री के मुख्य सैन्य सलाहकार के रूप में भी कार्य करेगा। इन संवैधानिक परिवर्तनों ने न केवल उनके पद की शक्ति बढ़ाई है, बल्कि उनका कार्यकाल भी नए सिरे से निर्धारित किया है। पहले उन्हें 2027 में सेवानिवृत्त होना था, लेकिन सीडीएफ के नए 5 साल के कार्यकाल के कारण अब वह कम से कम नवंबर 2030 तक इस शक्तिशाली पद पर बने रहने वाले है। पाकिस्तान ने एक और महत्वपूर्ण पद, नेशनल स्ट्रैटेजिक कमांड के कमांडर का भी सृजन किया है। यह चार-स्टार वाला पद देश की रणनीतिक सेनाओं के आपरेशनल इंटीग्रेशन के लिए जिम्मेदार है, और प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने लेफ्टिनेंट जनरल आमिर रजा को 4-स्टार जनरल रैंक पर प्रमोट करने के बाद इस पद पर तैनात किया है।

पाकिस्तान के सैन्य इतिहास को देखकर ये बदलाव बेहद महत्वपूर्ण हैं। अतीत में सेना ने चार बार तख्तापलट कर देश पर शासन किया है और नागरिक सरकारों पर भी उसका गहरा प्रभाव रहा है। लेकिन इस बार, सेना ने सड़कों पर टैंक उतारने के बजाय, संवैधानिक और संसदीय माध्यमों से अपनी शक्ति बढ़ाई है। हालांकि, आलोचक इस 27वें संविधान संशोधन को संवैधानिक तख्तापलट करार दे रहे हैं, उनका मानना है कि यह कदम पाकिस्तान की राजनीतिक व्यवस्था में सेना के प्रभुत्व को और मजबूत करता है।

न्यूज ब्रीफ

खगोलविदों ने अंतरिक्ष में की रेडियो आकाशगंगाओं की पहचान

वाशिंगटन। अंतरिक्ष में अमेरिका के खगोलविदों ने कुछ ऐसी रेडियो आकाशगंगाओं की पहचान की है, जो अब अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर हैं। वैज्ञानिकों को ताजा खोज यह समझने में मदद करेगी कि जब किसी आकाशगंगा का केंद्रीय सुपरमैसिव ब्लैक होल, जो उसके इंजन की तरह काम करता है, निष्क्रिय हो जाता है, तो उस आकाशगंगा का क्या होता है। इस नई रिसर्च ने आकाशगंगाओं के जीवन चक्र को समझने की दिशा में एक नई और रोमांचक खिड़की खोल दी है।
खगोलविदों ने इसके लिए पृथ्वी के ऊपर अंतरिक्ष के एक खास हिस्से पर फोकस किया, जिसे एक्सएमएम-न्यूटन एक्स-रे स्पेसक्राफ्ट ने बहुत करीब से देखा था। रेडियो आकाशगंगाएँ अंतरिक्ष में रेडियो तरंगों के मामले में बहुत ज्यादा चमकीली होती हैं। इनमें गैस के बहुत बड़े लोब होते हैं, जो लाखों प्रकाश वर्ष तक फैले हो सकते हैं। जब कोई रेडियो आकाशगंगा अपने जीवन के अंतिम चरण में पहुंचती है, तो उसे रेमनेंट (अवशेष) कहा जाता है। इस वक्त तक आकाशगंगा के केंद्र से निकलने वाले जेट काम करना बंद कर देते हैं। ये जेट सक्रिय गैलेक्टिक न्यूक्लिआई से जुड़े होते हैं, जिन्हें सुपरमैसिव ब्लैक होल से ऊर्जा मिलती है। जब ब्लैक होल का इंजन बंद हो जाता है, तो इन जेट्स को ऊर्जा नहीं मिल पाती। इसके कारण विशाल रेडियो लोब धीरे-धीरे फीके पड़ने लगते हैं और आकाशगंगा का अंत शुरू हो जाता है। रिसर्चर्स ने इस खास क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए कई उन्नत उपकरणों का इस्तेमाल किया। इनमें दक्षिण अफ्रीका के उत्तरी केप में मौजूद मीरकैट रेडियो टेलीस्कोप शामिल है, जो 64 एंटेना का एक बड़ा नेटवर्क है। इसके अलावा, जंस्की वेरी लार्ज एरे और लोफर नेटवर्क का भी इस्तेमाल किया गया। इन सभी टेलीस्कोप के डेटा ने मिलकर एक पावरफुल विजन तैयार किया, जिससे वैज्ञानिकों को यह समझने में मदद मिली कि आकाशगंगा के अंदर मौजूद कण कैसे अपनी ऊर्जा खो देते हैं।

वैज्ञानिकों ने नदी की तलछट में की एक विशेष बैक्टीरिया की पहचान

टोक्यो। जापानी वैज्ञानिकों ने नदी की तलछट में एक विशेष बैक्टीरिया की पहचान की है, जो पानी और मिट्टी में सालों तक बने रहने वाले खतरनाक फारएवर केमिकल्स (पीएफएएस) को प्रभावी ढंग से नष्ट करने में सक्षम है। यह महत्वपूर्ण शोध किया है कोबे यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने। यह खोज ऐसे समय में सामने आई है जब दुनियाभर इन जिद्दी प्रदूषकों से निपटने के लिए संघर्ष कर रहा है और कम लागत वाले समाधानों की तलाश है। इस तकनीक से भविष्य में पानी को पूरी तरह शुद्ध करना संभव हो पाएगा, ऐसा वैज्ञानिकों का मानना है।

भारत ने नेपाल भेजी सहायता की पांचवीं खेप, 11 सदस्यीय बचाव दल और 5.5 टन दवाएं काठमांडू पहुंची

काठमांडू। नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ से प्रभावित लोगों के बचाव और राहत कार्यों में सहयोग के लिए भारत से भेजी गई राहत सहायता की पांचवीं खेप काठमांडू पहुंच चुकी है। काठमांडू के त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर भारत द्वारा भेजी गई राहत सामग्री को भारतीय दूतावास के प्रतिनिधि ने नेपाल सरकार के प्रतिनिधि को हस्तांतरित किया। भारतीय विदेशमंत्री डा. एस. जयशंकर ने जानकारी दी कि भारत से सहायता की पांचवीं खेप विमान के जरिए नेपाल के लिए रवाना हुई। उन्होंने बताया कि विमान में विशेष खोज एवं बचाव उपकरणों से लैस 11 सदस्यीय बचाव दल तथा 5.5 टन आवश्यक दवाइयां भेजी गई हैं। यह दल बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में खोज एवं बचाव अभियान में सहायता करेगा। अभी दो दिन पहले ही भारत ने बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए 11 टन राहत सामग्री और तकनीकी दल के साथ चौथा विमान नेपाल भेजा था। नेपाल में इस समय बचाव और राहत कार्य तेजी से जारी है।

अमेरिकी हमले के जवाब में ईरानी सेना ने जार्डन, कुवैत , बहरीन में दागी मिसाइलें

तेहरान/वाशिंगटन/ अम्मान/कुवैत सिटी/मनामा

होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर छिड़ युद्ध में ईरान ने अमेरिकी हमले के जवाब में जार्डन, कुवैत और बहरीन को निशाना बनाया है। अमेरिका ने धमकी दी है कि ईरान पर और ज्यादा आक्रामक हमला किया जाएगा। ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड कार्प्स (आईआरजीसी) का दावा है कि उसने जवाबी कार्रवाई के अंतर्गत जार्डन में प्रिंस हसन एयरबेस और अमेरिकी मरीन बेस पर बैलिस्टिक मिसाइल हमला किया है।

अल जजीरा, अरब न्यूज, गल्फ न्यूज और सीबीएस न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, वाशिंगटन और तेहरान के बीच फिर से हमले शुरू होने के बाद अपने पहले संदेश में सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई ने कहा है कि इस बार ईरान की सेना अमेरिका को ऐसा दर्द देगी, जो वह कभी हीं भूल पाएगा।

कुवैत का कहना है कि वायु रक्षा प्रणाली ड्रोन हमलों का सक्रिय रूप से जवाब दे रही है। बहरीन ने कहा कि उसके एयर डिफेंस सिस्टम ने ईरान से आ रहे ड्रोनों को सफलतापूर्वक रोककर नष्ट कर दिया। अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) ने कहा कि उसकी सेनाओं ने पहली सितंबर को ईरानी ठिकानों पर कई हमले किए। यह कार्रवाई कमर्शियल जहाजों और अमेरिकी सैनिकों पर हमले की कोशिशों के जवाब में की गई ।

इस बीच ईरान के सरकारी मीडिया ने दक्षिणी इलाकों में धमाकों की रिपोर्ट प्रसारित की है। रिपोर्ट के अनुसार, असलुयेह, जिरोफ्ट, बंदर अब्बास, केशम द्वीप, कोनारक, चाबहार, जास्क, सिरिक और लावन में जोरदार धमाके हुए हैं। ईरान के रेड क्रिसेंट ने बताया कि सिरिक काउंटी के कुहेस्ताक शहर में शादी के घर पर हुए हमले में एक बच्चे समेत कम से कम चार लोगों की मौत हो गई और 50 से ज्यादा नागरिक घायल हो गए। रेड क्रिसेंट ने एक्स पर यह जानकारी दी। ईरानी सरकार ने कहा कि अमेरिकी हमले के बाद शादी का घर जमींदोज हो गया। सिरिक काउंटी होर्मुज जलडमरूमध्य के किनारे बसा है।

ईरानी मीडिया ने कोहोर्मुज जलडमरूमध्य के साथ और उसके पूरब में कई शहरों के साथ-साथ दक्षिणी केरमान प्रांत के एक एयरपोर्ट पर धमाकों की रिपोर्ट दी। ईरान 28 फरवरी से अमेरिका के साथ जंग में है। इसी तारीख को अमेरिका-इजराइल के एकीकृत सैन्य हमले

में इस्लामिक रिपब्लिक के सुप्रीम लीडर अली खामेनेई और वरिष्ठ सैन्य अधिकारी मारे गए थे। इसके बाद ईरान ने मध्य पूर्व के अमेरिकी मददगार देशों पर हमला किया था। कुछ दिनों की खामोशी के बाद अमेरिका ने ईरान पर जोरदार हमला किया।राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने किसी भी जवाबी हमले का बहुत कड़ा जवाब देने की धमकी दी है।

ईरान ने ट्रंप की धमकी को धता बताते हुए जार्डन और संयुक्त अरब अमीरात में अमेरिकी सैनिकों को निशाना बनाया। आईआरजीसी के प्रवक्ता हुसैन मोहेबी ने एक्स पर चेतावनी दी कि वाशिंगटन को कड़ी सजा दी जाएगी। ईरान की तस्नीम न्यूज एजेंसी ने बाद में कहा कि ईरान की सेना ने अमेरिकी ठिकानों के खिलाफ सैन्य अभियान शुरू कर दिया है। महत्वपूर्ण यह है कि ईरान ने होर्मुज जलडमरूमध्य को नहीं खोला है। अमेरिका की ईरानी पोर्ट्स पर जवाबी नाकाबंदी जारी है।

पिछले 48 घंटों में होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास कमर्शियल टैंकरों पर दो हमलों की खबर मिली है। इसके बाद जहाज जजीरत उम्म अल घनम के उत्तर-पश्चिम में लगभग एक नाटिकल मील की दूरी पर लंगर डालकर रुक गया। दूसरी घटना, यूकेएमटीओ 124-26 (टैंकर) से जुड़ी है। इस टैंकर पर ओमान के खसाब से लगभग 17 नाटिकल मील पूर्व में जलडमरूमध्य से बाहर निकलते समय तीन अज्ञात प्रोजेक्टाइल (हथियार/गोले) से हमला हुआ। टैंकरों पर ये हमले ऐसे समय में हुए हैं जब अमेरिका-ईरान संघर्ष संभावित रूप से अधिक खतरनाक समुद्री चरण में प्रवेश कर चुका है। ईरानी खतरों के जवाब में अमेरिकी सेना ने ईरानी रडार और एयर डिफेंस सिस्टम और अन्य सैन्य बुनियादी ढांचे पर ताजा हमले किए हैं।

सना में हूती नियंत्रित विदेश मंत्रालय ने ईरान पर अमेरिकी हमलों को लेकर तेहरान के साथ एकजुटता का बयान जारी किया है। हूती नियंत्रित सबा समाचार एजेंसी के एक बयान में मंत्रालय ने कहा कि अमेरिकी हमलों से ईरान का संकल्प कमजोर नहीं होगा और तेहरान की प्रतिक्रिया अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत एक वैध अधिकार है। मंत्रालय ने अमेरिका पर क्षेत्र को तनाव की ओर धकेलने का आरोप लगाया और कहा कि इसके नतीजों के लिए वाशिंगटन और उसका समर्थन करने वाले जिम्मेदार हैं।

नेपाल में बालेन शाह : आपदा में अवसर या अग्निपरीक्षा

काठमांडू

नेपाल में जेन-जी आंदोलन के जरिए राजनीतिक बदलाव का चेहरा बने बालेन्द्र शाह बालेन के प्रधानमंत्री बनने के मात्र पाँच महीने बाद ही उनकी सरकार की साख पर सवाल उठ रहे हैं। युवा नेतृत्व से जनता को बड़ी उम्मीदें थीं, लेकिन अनुभवहीनता, जल्दबाजी और मनमाने फैसलों के आरोपों ने उनकी मुश्किलें बढ़ा दी हैं। हालांकि, हालिया प्राकृतिक आपदा बालेन के लिए अपनी प्रशासनिक क्षमता साबित करने का एक बड़ा मौका साबित हो सकती है।

सितंबर 2025 में सोशल मीडिया पर प्रतिबंध के विरोध से उपजे जेन-जी आंदोलन ने भ्रष्टाचार और परिवारवाद के खिलाफ व्यापक जनाक्रोश का रूप ले लिया था, जिसके बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा। अंतरिम सरकार के बाद हुए चुनाव में राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) ने 275 में से 182 सीटें जीतकर बड़ी सफलता हासिल की और बालेन शाह ने ओली को बड़े अंतर से हराकर सत्ता संभाली। लेकिन सत्ता संभालने के बाद बालेन के सामने कई विवाद खड़े हुए। वे संसद की शुरुआती बैठकों में बेहद कम उपस्थित रहे, पार्टी की केंद्रीय समिति की बैठकों से भी उनकी गैर-मौजूदगी पर सवाल उठे।

भारत को लेकर उनके कुछ बयानों और भारतीय अधिकारियों से दूरी ने द्विपक्षीय संबंधों को लेकर भी अटकलें पैदा कीं। वहीं, आरएसपी अध्यक्ष रवि लामिछाने के भारत दौरे

के दौरान मिले जोरदार स्वागत से पार्टी में सत्ता के दूसरे केंद्र की भी चर्चा तेज हुई। सरकार पर अध्यादेशों के सहारे शासन चलाने, जल्दबाजी में फैसले लेने और बाद में उन्हें वापस लेने के आरोप भी लगे। भारतीय सामानों पर कस्टम सख्ती का फैसला विरोध के बाद वापस लेना पड़ा। राइड-शेयर ड्राइवर गणेश नेपाली के आत्मदाह और सांप्रदायिक झड़पों जैसी घटनाओं ने सरकार की चुनौतियों को और बढ़ाया है। यह अनुभव नेपाल के बाहर भी देखा गया है, जैसे 1985 में असम गण परिषद की सरकार और दिल्ली में आम आदमी पार्टी की पहली सरकार, जिन्होंने आंदोलन से सत्ता तो पाई लेकिन प्रभावी शासन में चुनौती का सामना किया। अब बालेन शाह के सामने सबसे बड़ी चुनौती प्राकृतिक आपदा है। 26 अगस्त की सुबह त्रिशूली और भोटेकोशी नदियों में अचानक आई बाढ़ ने रसुवा और नुवाकोट जिलों में भारी तबाही मचाई है, जिसमें सैकड़ों लोगों की मौत हुई और कई लापता हैं। राहत और बचाव अभियान सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता बन गया है। यह आपदा बालेन के लिए एक गंभीर संकट के साथ-साथ अपनी प्रशासनिक क्षमता साबित करने का अवसर भी है। यदि उनकी सरकार सड़क, पुल और बिजली व्यवस्था बहाल करने, विस्थापितों का पुनर्वास कराने तथा केंद्र, प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन के बीच प्रभावी तालमेल स्थापित करने में सफल रहती है, तब इससे उनकी गिरती साख को संभालने में मदद मिल सकती है।

बेकार प्लास्टिक और कृषि अवशेषों से प्रोटीन से भरपूर बिस्किट तैयार

न्यूयार्क। वैज्ञानिकों ने बेकार प्लास्टिक और कृषि अवशेषों से प्रोटीन से भरपूर बिस्किट तैयार किए हैं। अमेरिका की साउदर्न इलिनाय यूनिवर्सिटी कार्बोनडेल के प्रोफेसर लाहिरू जयकोडी और उनकी टीम द्वारा विकसित इन बिस्किट को माइक्रोबाइट्स यानी माइक्रोबाइट्स नाम दिया गया है। हालांकि यह तकनीक अभी शोध के शुरुआती चरण में है और आम लोगों के खाने के लिए उपलब्ध नहीं है। इन बिस्किट की मुख्य सामग्री पालीइथिलीन टेरेफथेलेट यानी पीईटी प्लास्टिक है। यही प्लास्टिक आमतौर पर पानी और साफ्ट ड्रिंक की बोतलों में इस्तेमाल होता है। इसके साथ मकई के डंठल और पत्तियों जैसे कृषि अवशेषों का भी इस्तेमाल किया जाता है। वैज्ञानिकों ने इन पदार्थों को उपयोगी पोषक तत्वों में बदलने के लिए एक विशेष प्रक्रिया विकसित की है। इस प्रक्रिया में पहले आक्सीडेटिव हाइड्रोथर्मल डिसाल्यूशन तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें उच्च तापमान और दबाव के बीच पानी और आक्सीजन की मदद से प्लास्टिक तथा बायोमास को छोटे अणुओं में तोड़ा जाता है। इसके बाद विशेष रूप से प्रोग्राम किए गए यीस्ट यानी खमीर इन अणुओं को प्रोटीन, वसा, अमीनो एसिड, विटामिन और स्वाद से जुड़े घटकों में बदलते हैं।

कूटनीतिक मंच पर शहबाज शरीफ की दौड़, पुतिन ने नहीं दिया खास भाव

बिश्केक

किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के शिखर सम्मेलन से वीडियो सामने आया है, जिसने कूटनीतिक हलकों में काफी चर्चा बटोरी है। यह वीडियो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच हुई एक असामान्य मुलाकात को दिखाता है, जिसमें शरीफ की बाडी लैंग्वेज और कूटनीतिक प्रयासों पर सवाल उठ रहे हैं।

दरअसल, औपचारिक समूह फोटो सेशन के बाद जब सभी नेता अपने स्थानों से हटने लगे और पुतिन पोडियम से दूर जाने लगे, तभी शरीफ तेजी से उनकी ओर बढ़े। वीडियो में उन्हें पुतिन का हाथ पकड़कर रोकने और उनसे बातचीत करने का प्रयास करते देखा गया। हालांकि, इस दौरान पुतिन ने शरीफ की ओर हाथ नहीं बढ़ाया, जो पहले भी पोडियम पर अपने ठीक बगल में खड़े पाकिस्तानी प्रधानमंत्री से बात करने से बचते दिखे थे। यह घटनाक्रम अंतरराष्ट्रीय मंच पर पाकिस्तान की

कूटनीतिक स्थिति को लेकर कई सवाल खड़े करता है, खासकर तब जब डिप्लोमेसी में बाडी लैंग्वेज को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

इसके विपरीत, भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग को ग्रुप फोटो के लिए अन्य नेताओं के साथ जुड़ने से पहले सहजता से हाथ मिलाते और संक्षिप्त बातचीत करते देखा गया। पुतिन ने भी तस्वीर खिंचवाने से पहले पीएम मोदी का गर्मजोशी से अभिवादन किया। गौरतलब है कि पीएम मोदी ने एक दिन पहले ही बिश्केक में रूसी राष्ट्रपति के साथ महत्वपूर्ण द्विपक्षीय बैठक की थी। इस बैठक में दोनों नेताओं ने भारत-रूस संबंधों के विभिन्न पहलुओं, व्यापार, निवेश, ऊर्जा और उर्वरक सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान पीएम मोदी ने रूस-यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने की अपनी अपील को भी दोहराया, यह कहते हुए कि संघर्ष में बिताया गया हर दिन मानवता को पीछे धकेलता है। यह बैठक इस महीने के अंत में होने वाली पुतिन की भारत यात्रा (वार्षिक ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के लिए) से ठीक पहले हुई, जो दोनों देशों के मजबूत संबंधों को रेखांकित करती है। दोनों नेताओं ने बिश्केक में वर्ल्ड नोमैड गेम्स के उद्घाटन समारोह के लिए पुतिन की लिमोजिन में एक साथ यात्रा भी की थी, जो उनके बीच की व्यक्तिगत केमिस्ट्री को दर्शाता है।

नेपाल में 2.5 करोड़ घन मीटर बर्फ 2,000 मीटर नीचे गिरी, विस्फोट जैसा असर

काठमांडू

नेपाल के रसुवागढ़ी में विनाशकारी बाढ़ का कारण माने जा रहे हिमपर्वत के खिसकने (ग्लेशियर कोलैप्स) की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि करीब 2.5 करोड़ घन मीटर बर्फ और हिमखंड लगभग 2,000 मीटर नीचे आकर गिरे। विशेषज्ञों के अनुसार, इस घटना से आसपास के क्षेत्र में भारी ऊर्जा उत्पन्न हुई, जिसका प्रभाव बम विस्फोट जैसा था।

लांगटांग लेरुंग के उत्तर में हिमस्खलन और बाढ़ का अध्ययन कर रहे त्रिभुवन विश्वविद्यालय के भूगर्भशास्त्र केंद्रीय विभाग के प्रोफेसर डा. रंजन कुमार दाहाल के अनुसार, बर्फ का विशाल ढेर केवल नीचे नहीं गिरा, बल्कि आसपास व्यापक क्षति पहुंचाने वाला विस्फोट भी हुआ।

डा. दाहाल ने बताया कि सैटेलाइट डेटा के विश्लेषण और बेहद कम अनुमान के आधार पर भी करीब 2.5 करोड़ घन मीटर बर्फ नीचे गिरने की पुष्टि होती है। उनके अनुसार, लगभग 2,000 मीटर नीचे गिरने के दौरान इस बर्फीले ढेर से पैदा हुई ऊर्जा का असर बम विस्फोट जैसा रहा होगा। इस घटना से उत्पन्न कंपन को 5.2 रिक्टर स्केल के भूकंप के रूप में भी दर्ज किया गया था।

त्रिभुवन विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग भूगर्भविद् डा. दाहाल के साथ चीन के शंघाई स्थित टोंगजी विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और किंग्स कालेज लंदन, तथा इटली के पादुआ विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों ने करीब

एक वर्ष पहले से हिमालय और हिमाली क्षेत्रों में हो रही गतिविधियों का अध्ययन शुरू किया था।

अध्ययन के दौरान पता चला था कि रसुवागढ़ी के ऊपरी तिब्बती क्षेत्र में स्थित प्यूरेपु हिमताल के सुप्राग्लेशियल लेक यानी ग्लेशियर पर हाल में बने छोटे-छोटे जलकुंड और तालाब फट गए थे। इसके कारण पिछले वर्ष भी भोटेकोशी नदी में बाढ़ आई थी।

इसके बाद भूगर्भविदों और वैज्ञानिकों की टीम ने हिमालयी क्षेत्र के ग्लेशियरों में हो रही हलचल और गतिविधियों का अध्ययन शुरू किया। इसी अध्ययन के बीच पिछले बुधवार अचानक विनाशकारी बाढ़ आ गई, जिसके बाद टीम के कुछ सदस्य हिमस्खलन और बाढ़ के अध्ययन में जुट गए।

प्रोफेसर दाहाल के अनुसार, प्राप्त सैटेलाइट डेटा के विश्लेषण से पता चलता है कि हिमस्खलन की लंबाई करीब 1.3 किलोमीटर थी। इसने नीचे की ओर लगभग 500 से 800 मीटर क्षेत्र को अपनी चपेट में लेते हुए साफ कर दिया।

हालांकि, वैज्ञानिक अभी बर्फ के ढेर की वास्तविक मोटाई स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं कर पाए हैं। उपलब्ध विवरणों के आधार पर उनका अनुमान है कि गिरा हुआ बर्फीला ढेर करीब 60 से 70 मीटर मोटा रहा होगा।

इस आधार पर बर्फ और हिमखंड के आयतन का अनुमान लगाने पर करीब 4 करोड़ घन मीटर सामग्री नीचे गिरने की संभावना सामने आती है। हालांकि, प्रोफेसर दाहाल बेहद कम अनुमान के आधार पर भी कम से कम 2.5 करोड़ घन मीटर बर्फ नीचे गिरने की बात कहते हैं। वहीं, कुछ अन्य विशेषज्ञों ने प्रारंभिक तौर पर 10 करोड़ घन मीटर तक बर्फ गिरने का अनुमान लगाया है।

2.5 करोड़ घन मीटर बर्फ का आयतन कितना विशाल है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इससे लंदन के वेम्बली स्टेडियम को करीब 22 बार भरा जा सकता है। यह मात्रा मिस्र के प्रसिद्ध पिरामिड से करीब 10 गुना अधिक बताई जा रही है।

बर्फ के आयतन का वैज्ञानिक अध्ययन कर रहे विशेषज्ञों का कहना है कि वास्तविक रूप से नीचे गिरी बर्फ की मात्रा इन शुरुआती अनुमानों से कहीं अधिक भी हो सकती है।